

: 00000000 0000 00000, 00 0000 00000, 00000000 0000 00 00000 : 00000000000 00  
00000000000000 00 00000 00 0000000 00000000 000000000000 00 0000000 00 000000 : 00000000  
00000000 00 0000000 00 00000000 0000 00000 0000 00000 00 000000 00 000000 00 000000 00  
00000 00000 00 0000000 00000000 00000 :

000000 00000

0000000000 : उत्तरा प्रकरण पर अपनी टपिपणी के साथ मैंने अखबारों की भूमिका पर भी छोटी सी टपिपणी कर दी थी। लानत तो खुद के भेजी थी।  
कुछ पुराने साथी नाराज है और होना ही चाहता है , नहीं तो मेरी वो टपिपणी व्यर्थ जाती। उत्तराखंड में सोशल मीडिया पर शुक्रवार के जतिनी पोस्ट  
उत्तरा जी के मामले पर दखि उतनी अब तक शायद ही किसी और मामले पर हुई हों। Ndtv, ajtak, avpnew से लेकर रीजनल, लोकल चैनल्स  
तकने चर्चा के साथ इस घटना के रखा। उत्तराखंडी ही नहीं राष्ट्रीय स्तर के पत्रकारों, वचारवान लोगों ने सोशल मीडिया पर सरकार के मुगलिया  
बादशाही अंदाज की नंदा की। ऐसे में देहरादून के अखबारों में सरकार की छवि की गंभीर चर्चा के साथ खबर के सही ढंग से ना देने पर यहां के पत्रकारों के  
भी खूब गालियां पड़ीं। ये गालियां मैंने नहीं दीं। कुछ न्यूज पोर्टल देखे उनमें भी मीडिया की भूमिका पर सवाल उठा। ग। है। यहां के पत्रकारों की  
प्रतिक्रिया भी है।

मीडिया प्रभारी, मीडिया सलाहकार, मीडिया समन्वयक सब अपनी ड्यूटी कर रहे थे, नमक का पर्ज अदा कर रहे थे। लेकिन जब लगा कि संपादक पर  
मीडिया समन्वयक भारी पड़ ग। तो लोगों ने जो महसूस किया, लिख दिया। इनका काम सरकार की अच्छी छवि पेश करना और जनता के मतलब की सूचना।  
मीडिया के माध्यम से पहुंचाना है। जब ये खुद संपादक के हैसियत में आ जाते हैं। खबर का गलत बताते हैं या गलत जानकारी फीड करने लगते हैं तो  
मीडिया की हत्या करने लगते हैं। ऐसे ही मीडिया के लुभाने भरमाने वाले लोगों की वजह से हमारे देश का मीडिया प्रेस की आजादी के मामले में १३८वें  
स्थान पर आ गया है।

अगर मीडिया की समालोचना का अपराध हुआ तो इसमें मेरे साथ सैकड़ों और लोग शामिल हैं। हम सबने ये बहुत अच्छा गुनाह कर डाला। चलो हनुमान  
में इस प्रकरण का फॉलोअप तो दूसरे दिन पहले पेज पर आया। सवाल तो अब भी है कि जब असल घटना हुई तो धोकर अन्दर क्यों खदेडी गई। आज  
अन्दर का पैकेज भी है। क्ल वाकई नरिशा हुई थी, जबकि इस अखबार में पूरा बर्षित जैसे पहाड़ के प्रति बेहद संवेदनशील समाचार संपादक और क  
का बीट पर क्लसपरट जानकारी रखने वाले वरषिठ रिपोर्टर हैं। तो क्या जसि तरह खबर परोसी गई उसके पीछे इस अखबार के रिपोर्टर रह चुके सूचना  
समन्वयक दर्शन रावत की मेहनत थी। या फिर बॉस की? अगर ऐसा होता रहता है तो उन पत्रकारों का क्या मनोबल रहेगा जो कबलि है और इस अखबार  
से बड़ी आस्था से जुड़े हैं। जागरण में काफी हद तक जनभावनाओं की कद्र दखि रही है। यहां के धीर गंभीर संपादक कुशाल जी विवादों से दूर रहते हैं।  
आज के उनके पैकेज में भी कुछ चर्चा। दखि रही है। अमर उजाला ने क्ल भले ही पूरा भाव न पकड़ा हो लेकिन प्लेसिंग सबसे अच्छी थी। टॉप बॉक्स।  
आज भी पहले पेज पर प्लायर के अलावा अन्दर पूरा पेज, जसिमें उत्तराखंड की उत्तराओं की चर्चा दखि रही है। संपादक जी ने शहर से बाहर होते हुए  
भी अपनी टीम के गाइड किया उसके ल। सराहना।

मैं आज सोशल मीडिया का प्रभाव भी देख रहा हूँ। यहां बात सरिफ इस प्रकरण की हो रही है और मेरा मानना है कि ऐसे ही और मुद्दों पर भी ये दबाव  
बनना चाहिए। वैसे सोशल मीडिया पर सब कुछ बहुत अच्छा नहीं हो रहा है। वहां तो चुनाव लडा जा रहा है। ये देखना भी सुखद रहा कि उत्तरा  
प्रकरण पर सरकार के समर्थन में उतरे कुछ भाड़े के जैसे लोगों के मुंह की खानी पड़ी और मैदान छोड़ना पड़ा।

Written by दनिश जुआल  
Tuesday, 03 July 2018 19:54

---

□ कबात साफ है कि इस प्रकरण में अगर बात कुछ नयाय की तरफ जाती है, मुख्यमंत्री परोक्ष रूप से ही सही अपनी गलती का अहसास करते हैं, ठसकी अपसरों और खुद के खुदा मान बैठे लोगों के थोड़ी सी भी अक्ल आती है तो क्रेडिट उन सैकड़ों लोगों के जाता है जो कल से अपनी भावना व व्यक्त कर रहे थे। सब इसलिये दुखी थे कि कश्चित्किक क भरे दरबार में अपमान हुआ। सबके अपनी प्राइमरी शक्तिशाली शक्ल याद आयी होगी। जसिने हमें अक्सर ज्ञान ही नहीं जीवन केबुनयादी पाठ पढ़ा। थे। मुख्यमंत्री ने भी प्राइमरी जरूर पढ़ी होगी, लेकिन उनकेलिये सब नौकर हैं। वो मालकिठहरे सूबे के। सस्पेंड करो इसके, ले जाओ इसके, कस्टडी में लो इसके..... उत्तरा जी केकनों ये इसके ... इसके.... इसके ... बार बार गूंज रहा था। पता की मौत केबाद बखिरी गृहस्थी से दुखी शक्तिशाली केलिये न्याय नहीं है तो ऐसा अपमान तो ना करो। ऐसी तो जेलर की भी भाषा नहीं होती। बहरहाल शक्तिशाली थी कुछ तो सबकसखाया ही। परोक्ष रूप से ही सही। चोर उचक्रेतो उन्होंने। कबरादरी केलिये कहा और यकीन माना। सामने चाटकर कुछ भी कहे पीठ पीछे आम जनता इस बरादरी के ऐसे और इससे मलिते जुलते संबोधनो से नवाजती है। यहां मीडिया से द्रवति होने की अपेक्षा थी। रपिपोर्ट कर रहे और खबर तय कर रहे लोगों में भी कुछ शक्तिशाली की संतान होंगे और उनहें पता होगा सम्मान और स्वाभिमन का महत्व शक्तिशाली क्या बताते हैं।

मीडिया में अगर कुछ लोग ये गलतफहमी पाले बैठे हैं कि सच तो वही माना जागा जो हम लखिंगे तो पोलैड की तानाशाही का इतहास पढ़ लें। हम तो भारत जैसे लोकतंत्र में हैं। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री के नेकसलाह का सरिफ मीडिया मैनेजमेंट के भरोसे ना रहें। यहां की राजनीति में टांग खींचने का खेल आप तो जानते ही हैं।

(अमर उजाला और हनि दुस् तान समाचार पत्र में कई संस्करणों में संपादकरह चुके हैं दनिश जुआल। उनका यह आलेख उनकी वाल से साभार है)